[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 269 **D** **आपका अनुक्रमांक.....**

Unique Paper Code : 205155

Name of the Course : **B.A. (Programme) 1 Year**
(कथा एवम् संस्मरण साहित्य)

Name of the Paper : Hindi Discipline, Paper – 1A
हिन्दी अनुशासन, पेपर – 1A

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी-उपन्यास की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी के विकास का परिचय दीजिए। (9)

2. हिंदी संस्मरण साहित्य के विकास की चर्चा कीजिए।

अथवा

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानवीय उदात्तता के चित्र मिलते हैं। विचार कीजिए। (9)

3. किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (9)

(क) तुममें तो कुछ समझने को है ही नहीं। बाहर है, वही भीतर है। भीतर वही विनोद का झरना झरता रहता है, जिसका आधा जल आँसू का और आधा हँसी का है और जिसमें इसे हर बात आर-पार दिखाई देती है। लेकिन अनहोनी घट नहीं सकती, होनी टल नहीं सकती। जो हो गया, हो गया। उसे मिटाना अब बस से बाहर की बात है।

P.T.O.

अथवा

जरा-सी कंकरी ने आकर सोये हुए विशाल जल-तल की स्थिरता भंग की दी। हल्की-सी हवा का झोंका जैसे जब जल-तल को थपकता हुआ आता है, तो उसे सारे तल में एक सिहरन-सी होती है, उसमें कँपकँपी उठ आती है। वैसे ही किसी आवेग के मीठे झोंके ने उनके सोये जीवन के तल पर एक सिहरन सी फैला दी। कटोरे को जैसे किसी ने बाहर छू दिया, और उसके भीतर का पानी यहाँ से वहाँ तक काँप गया। (परख से)

(ख) मुसीबत में अगर किसी के काम न आया तो वह जीवन बेकार है बेटा ! भूख ने लोगों की अँतड़ियों का रस सोख लिया और मैं बेहया हरा-भरा यह सब देखा करता। बेचैनियों का तूफान उठा करता मेरे अंदर, धरती पर काफी गुस्सा आता कि मेरी जड़ों को तो वह अब भी रस पहुँचाया करती है परतु अकाल-ग्रस्त मानव समाज की घोर उपेक्षा कर रही है.....।

अथवा

सत्याग्रह का संदेश जनता तक पहुँचते-पहुँचते अपवित्र हो गया है। हम जब आध्यात्मिक अस्त्रों का उपयोग आध्यात्मिक तरीकों से नहीं करते तो उनका कुंठित हो जाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा यह सत्याग्रह अपूर्ण रहा, यही कारण है कि इससे शासकों का हृदय द्रवित नहीं हुआ... भविष्य में केवल एक व्यक्ति को सत्याग्रह करना चाहिए और वह व्यक्ति ऐसा हो जो कि सत्याग्रह करने के योग्य हो....। (बाबा बटेसरनाथ से)

(ग) उसके स्वार्थ के कारण ही उसका अर्धांग-नारी-जाति-पीड़ित है। एकांकी दृष्टिकोण से सोचने के कारण ही पुरूष न तो स्त्री को सती बनाकर ही सुखी कर सका और न वेश्या बनाकर ही। इसी कारण वह स्वयं ही झकोले खाता है और खाता रहेगा। नारी के रूप में न्याय रो रहा है। महाकवि! उसके आँसुओं में अग्नि-प्रलय भी समाई है और जल प्रलय भी।

अथवा

"व्यापारी वस्तुओं से खेलता है, उनका दास नहीं बनता। जिस धन को वह मोहान्ध होकर चाहता है उसे भी प्राणों का संकट आने पर बिना उदास तृणवत् छोड़ देता है। प्राणों से अधिक वह अपनी साख चाहता है; साख के लिए प्राण निछावर करता है। ब्याज का फैलाव घटता-बढ़ता है और लुटता भी रहता है प्रसंग आने पर बुद्धिमान उसकी चिन्ता छोड़ देते हैं। तुम केवल अपनी साख बढ़ाने की चिन्ता करो।" (सुहाग के नूपुर से)

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए -

(i) 'परख' उपन्यास की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

अथवा

कट्टों के चरित्र की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ii) 'बाबा बटेसरनाथ' में निहित संदेश को उजागर कीजिए।

अथवा

'बाबा बटेसरनाथ' के मुख्य पात्रों का परिचय दीजिए।

(iii) 'सुहाग के नूपुर' की मूल संवेदना लिखिए।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' के आधार पर माधवी और कन्नगी के चरित्र की तुलना कीजिए। (15)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

मैं कुछ बोलता नहीं। मेरा मन जाने कैसे गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी।

अथवा

दारिद्र्य की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद-माला के वैभव का काल्पनिक चित्र-उन सूखे डण्ठलों के रंध्रों से नभ में - बिजली के आलोक में - नाचता हुआ दिखाई देने लगा। खिलवाड़ी शिशु जैसे श्रावण की संध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकता है, वैसे ही मधूलिका मन-ही-मन कह रही थी। "अभी वह निकल गया।" (8)

6. पुरस्कार 'कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'पाजेब' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (10)

7. "सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद के मूर्धन्य कवि हैं।" निराला की साहित्य-साधना' के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

नाट्य कला के विकास में पृथ्वीराज कपूर की भूमिका पर प्रकाश डालिए।